❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र










वर्ष 48, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 18 नवम्बर, 2024 से रविवार 24 नवम्बर, 2024

विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125

दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh


महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष

दो वर्षीय आयोजनों की विश्वव्यापी श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०) के अन्तर्गत

# पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जालन्धर में समारोह पूर्वक सम्पन्न

## महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं ने पंजाब को दी नई रोशनी की किरण - भगवन्त मान, मुख्यमंत्री

### आतंकवाद, अंधविश्वास और धर्मान्तरण के उन्मूलन हेतु संकल्पित है आर्यसमाज - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

### महर्षि की प्रेरणा से पंजाब के महापुरुषों ने देश की स्वाधीनता और विकास में दिया अमूल्य योगदान - सुदर्शन शर्मा, प्रधान

वर्तमान में गतिशील कालखण्ड में आर्य समाज एक नए युग की ओर अग्रसर है। चारों तरफ अपार उमंग - उत्साह और उल्लास का वातावरण है, और ऐसा क्यों न हो? जब कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष पर दो वर्षीय आयोजनों की धूम संपूर्ण देश और दुनिया में मची हुई है। इस वृहद श्रृखंला में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा जालंधर के लवली प्रौफैशनल युनिवर्सिटी के सभागार में 10 नवंम्बर 2024 को विशाल आर्य महा सम्मेलन भव्य समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली, हिमाचल, जम्मू कश्मीर और पूरें पंजाब से अधिकारी, आर्य संन्यासी,





पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञाहुतियां प्रदान करते मुख्यमन्त्री श्री भगवन्त मान एवं इस अवसर पर मुख्यमन्त्री जी को उन्हीं का चित्र भेंट करते आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, लवली यूनिवर्सिटी के प्रमुख मित्तल बन्धु एवं अन्य महानुभाव।

*- शेष सामचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 3-4 पर*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका,

आर्य समाज ह्यूस्टन एवं अन्य दान-दाताओं के सहयोग से स्थापित आर्य प्रगति स्कॉलरशिप के अन्तर्गत

# जरूरतमंद सुयोग्य और मेधावी 200 छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु 74 लाख की छात्रवृत्ति वितरित

### संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य : महर्षि के संदेश को चरितार्थ कर रहा है - आर्य समाज -सुरेन्द्र कुमार आर्य

### शिक्षा क्षेत्र में आर्य समाज का अभूतपूर्व योगदान : खेल प्रतियोगिता में भी आगे बढ़े युवा शक्ति -वीरेन्द्र सचदेवा, भाजपा अध्यक्ष दिल्ली




आर्य समाज सदैव शिक्षा सेवा यज्ञ को आगे बढ़ता आ रहा है, पिछले 150 वर्षों के इतिहास में सैकड़ो गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में बालवाड़ी, छात्रावास, अनाथालय और

*- शेष पृष्ठ 3 एवं 5 पर*

पर्यटन एवं संस्कृति विभाग, उ.प्र. एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्रदेश द्वारा

## महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती

## ज्ञान ज्योति महोत्सव-स्मरणोत्सव

विस्तृत समाचार एवं सम्बन्धित चित्र अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

### रविवार 24 नवम्बर, 2024 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी माननीय अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य मानुभावावों से निवेदन है कि बैठक में समय पर अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

निवेदक :- धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)

देववाणी-संस्कृत

# द्वेषी को अपना प्रशंसक बनाने वाला सुवीर कहलाता है

वेद-स्वाध्याय

**नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीर उच्यसे।।**

**-ऋ० 6।45।6**

**ऋषिः - बार्हस्पत्यः शंयुः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः - गायत्री।।**

**शब्दार्थ**- हे इन्द्र! **द्विषः** द्वेष करनेवाले के द्वेषभाव को इत् उ=निश्चय से **अति नयसि**= निकाल डालता है। **तान्**=उन्हें **उक्थशंसिनः** =अपना प्रशंसक **कृणोषि**= बना देता है। **नृभिः**=सच्चे मनुष्यों से तू **सुवीर उच्यसे**= सुवीर कहाता है।

**विनय-''सुवीर''-सर्वश्रेष्ठवीर**-किसे कहना चाहिए? अन्त में तो प्रत्येक गुण की पराकाष्ठा भगवान् में ही है; परिपूर्ण वीरता का निवास भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का अनुकरण करनेवाले मनुष्य, नर लोग, सच्चे पुरुष उन भगवान् को ही 'सुवीर' नाम से पुकारते हैं, पर उनकी वीरता कैसी है? अज्ञानी लोग समझते हैं कि अपने शत्रु, द्वेषी को हानि पहुँचाने में सफल हो जाना ही बहादुरी है। यह निरा अज्ञान है। क्रोध के वश में आ जाना तो हार जाना है। क्रोधवश होकर मनुष्य केवल अपने को विषयुक्त करता और जलाता है। एवं, क्रोधी अपने शत्रु का नाश क्या करेगा? वह तो अपना नाश पहले कर लेता है। ज्यों-ज्यों हम अपने द्वेषी के लिए अनिष्ट-चिन्तन करते हैं, त्यों-त्यों उसमें हमारे प्रति द्वेष और बढ़ता जाता है। उसका द्वेष, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। शत्रु को हानि पहुँचा लेने पर, उसके शरीर को चोट दे लेने पर, यहाँ तक कि उसे मार डालने पर भी शत्रुता नष्ट नहीं होती, वह तो और-और बढ़ती जाती है। शत्रु के शरीर का, धन का, मान का एवं उसकी अन्य सब वस्तुओं का नाश करने में हम चाहे सफल हो जाएँ, पर उतना-ही-उतना वह शत्रु (असली शत्रु) बढ़ता जाता है, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। यह क्या हुआ? वीरता (परमात्मदेव से अनुकरणीय सच्ची वीरता) इसमें है कि वह उसकी बाहरी किसी चीज का नाश न करें (और क्रोध से हम अपना भी नाश न करें) किन्तु किसी तरह उसकी शत्रुता का नाश कर दें। उसके अन्दर हम ऐसे घुसें कि वह हमारा शत्रु न रहे, वह मित्र हो जाए। बहादुरी इसमें है, कि हम क्रोध को जीतकर, धैर्य रखकर अपने द्वेषी के द्वेषभाव को बिल्कुल निकाल डालें, ऐसा निकाल डालें, कि वह हमारी निन्दा करना तो दूर रहा, वह हमारी प्रशंसा के गीत गाने लगे। यह है शत्रु पर विजय पाना, परन्तु ऐसी विजय पाने के लिए अपने में बड़ा भारी बल चाहिए। अपने में बलिदान की न समाप्त होनेवाली शक्ति चाहिए-बड़ा धैर्य चाहिए, बड़ी भारी वीरता चाहिए। हम भी परिमित अर्थ में बोला करते हैं, कि वीर वह जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करें, पर हमें तो अपरिमित अर्थ में उस भगवान् की सुवीरता का आदर्श अपने सामने रखना चाहिए, जिनके विषय में भक्त लोग समझते हैं, कि आज संसार में जो लोग बिल्कुल उलटे रास्ते जा रहे हैं, वे भी एक दिन लौटकर भगवद्भक्त-भगवान् के प्रशंसक बनेंगे और मुक्त होंगे। भगवान् की उस अपरिमित वीरता में से, हृदय-परिवर्तन करने की उनकी इस अनन्त शक्ति में से और उनके अनन्त धैर्य में से हम भी कुछ ले-लें, हम भी वीर बनें।

**-:साभार:- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

बच्चों की असमय मौत की समीक्षा

# दम तोड़ता बचपन जिम्मेदारी किसकी?

***...बुंदेलखंड क्षेत्र के करीब 200 किलोमीटर इलाके में महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज एकमात्र अस्पताल है, जहाँ मरते इंसान को बचाने की आखिरी कोशिश की जाती है। कोई 100 किलोमीटर चलकर आता है, तो कोई दो सौ किलोमीटर इस घटना के बाद एक बार जांच के आदेश दिए गए हैं। कुछ दिन बाद मामला शांत हो जाएगा, पांच सौ-सात सौ पेजों के कागज का पुलिंदा सरकारी टेबलों पर धूल खा रहा होगा। मंत्री-नेता चुनावी रैली में भाषण झाड़ रहे होंगे। होता भी यही आया है, ना ये पहली घटना है और ना ये आखिरी। अस्पताल में आग की घटनाओं ने हाल के समय में कई जगह नवजात शिशुओं की जान ली है। हर घटना के बाद प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था को और दुरुस्त करने के दावे करते रहे हैं।....***

उत्तर प्रदेश के झांसी का महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज बीते दिनों नवजातों की चीखों से गूंज उठा। अस्पताल के बच्चा यूनिट में अचानक आग की लपटें उठने लगीं। आग बुझाने की कोशिश करते-करते भी दस मासूमों की जान चली गई और बड़ी संख्या में नवजात झुलस गए। अगली सुबह उठते ही लोगों ने जैसे ही अपने मोबाइल पर नजर डाली, सबसे टॉप पर झांसी अग्निकांड की खबर थी। दस बच्चों की मौत की खबर देखते ही मानो लोग सहम से गए। बच्चों की मौत पर लोगों का गुस्सा फूटना पूरी तरह जायज है। इन मौतों के लिए अस्पताल प्रशासन, अस्पतालों की निगरानी के लिए बैठे सरकारी अमले का जिम्मा संभाल रहे लोगों की आपराधिक लापरवाही का मामला बनता है। उनकी यह लापरवाही उन बच्चों की जान पर भारी पड़ गई, जो जिंदगी के हकदार थे।

बुंदेलखंड क्षेत्र के करीब 200 किलो मीटर इलाके में महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज एकमात्र अस्पताल है, जहाँ मरते इंसान को बचाने की आखिरी कोशिश की जाती है। यहां कोई 100 किमी.चलकर आता है, तो कोई 200 किलोमीटर। इस घटना के बाद एक बार जांच के आदेश दिए गए हैं। कुछ दिन बाद मामला शांत हो जाएगा, पांच सौ-सात सौ पेजों के कागज का पुलिंदा सरकारी टेबलों पर धूल खा रहा होगा। मंत्री-नेता चुनावी रैली में भाषण झाड़ रहे होंगे। होता भी यही आया है, ना ये पहली घटना है और ना ये आखिरी। अस्पताल में आग की घटनाओं ने हाल के समय में कई जगह नवजात शिशुओं की जान ली है। हर घटना के बाद प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था को और दुरुस्त करने के दावे करते रहे हैं।

ऐसे ही थोड़े समय पहले केरल में डेंगू महामारी की तरह फैला था। इसके चलते करीब 400 बच्चों की मौत हुई। इसके बाद राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप और एक-दूसरे पर निशाना साधने का दौर शुरू हो गया। यह इन दिनों बेहद आम हो गया है। केरल से लेकर झाँसी तक लोक स्वास्थ्य सेवाओं की हालत कितनी दयनीय है, यह सोचने वाली बात है। केवल इतना भर नहीं, पिछले कुछ वर्षों में देश के तमाम हिस्सों में बच्चे असमय काल-कवलित हुए हैं। इस पर होने वाले विमर्श के बिंदु पूरी तरह वास्तविक मुद्दों पर केंद्रित होने चाहिए। इसलिए और भी, क्योंकि हमारे अधिकांश राज्यों के स्वास्थ्य ढांचे में बेलगाम भ्रष्टाचार, लापरवाही और सरकारों की अनदेखी सेहत के इस तंत्र को बीमार बना रही है।

साल 2020 में कोटा में एक महीने के भीतर 110 बच्चों की मौत ने पूरे देश को चौंका दिया था। मौतों की वजह लापरवाही और संसाधनों की कमी थी। इसी साल गुजरात के राजकोट के सरकारी अस्पताल में 111, राजस्थान के कोटा में 110, जोधपुर में 146 और बीकानेर के अस्पताल में 162 बच्चों ने दम तोड़ा था। बीकानेर में एक साल में 1681 और झारखंड की राजधानी रांची के रिम्स में 1150 बच्चों की मौत हुई थी। लखनऊ के केजीएमयू में इससे एक साल पहले 654 बच्चों की जान गई थी, तब खबर आई थी कि डॉक्टरों के 50 प्रतिशत पद खाली हैं। इससे पता चलता है कि डॉक्टरों और संसाधनों की कमी के अलावा लापरवाही नवजातों की जिंदगी के लिए काल बन रही है। एक साल के भीतर इन 11 अस्पतालों में 9336 बच्चों की जान गई थी। केवल बेहतर इलाज या संसाधनों की कमी के कारण ही बच्चे नहीं मरे, बल्कि लापरवाही से भी पिछले कुछ सालों में बड़ी संख्या में बच्चों को काल के मुख में समाना पड़ा। बीती 25 मई को दिल्ली के विवेक विहार स्थित एक अस्पताल में आग लगने से सात नवजात बच्चों की मौत हो गई। तब पुलिस ने बताया था कि यह बेबी केयर अस्पताल अवैध रूप से चल रहा था और इसमें सिर्फ पांच बेड थे, जबकि 12 बच्चों को भर्ती किया गया था। दिल्ली फ़ायर सेवा के अधिकारियों ने एक बयान में बताया था कि आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट हो सकती है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल इस अस्पताल के संचालन की मंजूरी पर खड़ा किया गया। यह अस्पताल एक रिहायशी इलाके के पास की तंग जगह में एक कमर्शियल बिल्डिंग में स्थित था। इसी इमारत में एक बैंक भी था। अस्पताल का पिछला हिस्सा रिहायशी कॉलोनी से जुड़ा हुआ था। शव इतनी बुरी तरह जल गए थे कि उनकी पहचान के लिए डीएनए टेस्ट कराए गए। बाद में जाँच के आदेश, मुआवजा और परिवारों की मोर्चरी के बाहर लाइन। नवंबर 2021 में भोपाल के कमला नेहरू अस्पताल के पीडियाट्रिक विभाग में आग लगने से चार बच्चों की मौत हो गई थी, जबकि तीन बच्चे झुलस गए थे। प्रशासन का कहना था कि सिलेंडर में ब्लास्ट या शॉर्ट सर्किट इस आग की वजह हो सकती है। राजधानी भोपाल में स्थित आठ मंज़िल के इस अस्पताल में आग बुझाने के लिए कोई भी इंतज़ाम नहीं था। इस अस्पताल में लगभग 400 मरीज हमेशा भर्ती रहते हैं। वहीं यह बात भी सामने आई कि अस्पताल के पास बिल्डिंग की फायर एनओसी भी नहीं थी। अस्पताल ने न तो एनओसी ली थी और न ही फायर सेफ्टी ऑडिट हुआ था। इसके साथ ही आग को काबू करने के लिए अस्पताल में लगे उपकरण भी काम नहीं कर रहे थे।

9 जनवरी 2021 को महाराष्ट्र के भंडारा के जिला अस्पताल के स्पेशल न्यूबॉर्न केयर यूनिट में आग लगने से 10 नवजातों की मौत हो गई थी। ये सभी नवजात एक महीने से तीन महीने के बीच के थे। दिसंबर 2011 में कोलकाता के एक निजी अस्पताल एएमआरआई में भीषण आग लगी थी, जिसमें कम से कम 89 लोगों की मौत हो गई थी। ज्यादातर लोगों की मौत दम घुटने से हुई।

इन घटनाओं को पढ़ने के बाद लगता है, जैसे हम बेजान हैं और सत्ता से सवाल न करना हमारी मजबूरी बन चुकी है। अभी दो दिन पहले ही प्रयागराज में एक बच्चे को बचाने के लिए माता-पिता ने चंदा करके 34 हजार रुपये में निजी एंबुलेंस की। प्रयागराज पहुंचने से पहले ही नौ दिन के नवजात ने दम तोड़ दिया।

कोरोना काल में गुजरात के अस्पतालों में आग से कई मरीजों की मौत के मामलों को लेकर 2021 में सुप्रीम कोर्ट की फटकार का भी कोई असर नहीं हुआ।

शीर्ष कोर्ट ने कड़ी टिप्पणी की थी कि अस्पताल सिर्फ कमाई का केंद्र बन गए हैं, वहां मरीजों की सुरक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता। आज ये सवाल हर जगह चस्पा कर देना चाहिए कि आखिर नेताओं की रैली, उनके भाषण के बीच आग में झुलसकर दम तोड़ते बच्चों की मौत का जिम्मेदार कौन है?

**- संपादक**

प्रथम पृष्ठ का शेष

## पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जालन्धर में समारोह पूर्वक सम्पन्न.....

विद्वान, छात्र-छात्राओं सहित हजारों आर्य नर-नारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पंजाब के माननीय मुख्य मंत्री श्री भगवन्त मान जी ने यज्ञ में पंजाब सभा के अधिकारियों के साथ आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना और प्रार्थना की। इस अवसर पर पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवन्त सिंह मान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं ने पंजाब में आज से डेढ़ सौ साल पहले नई रोशनी और चेतना का संचार किया था। उन्हीं की प्रेरणा से हजारों क्रान्तिकारियों ने अपना जीवन देश की सेवा में बलिदान कर दिया। सरदार भगत सिंह जी, करतार सिंह सराभा, लाला लाजपत राय जी, शहीद उधम सिंह, ढींगरा जी और न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने उनसे प्रेरणा पाई थी। स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से उनके शिष्यों ने सारे पंजाब और देश विदेश में शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा दिया। आज चार लाख छात्र-छात्राएं पंजाब के आर्य समाज क विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और मैं ये भी कहूंगा कि आर्य समाज के विद्यालयों में बेहतर शिक्षा मिल रही है। इसके लिये मैं आर्य समाज के अधिकारियों को बधाई देना चाहता हूँ। इस अवसर पर मैं पंजाब सरकार और पंजाब की जनता की ओर से उनके चरणों में नमन करता हूं और जैसे उनके निर्वाण दिवस पर उनको नमन करते हुये विज्ञापन अखबारों में दिये गये थे, वैसे ही 12 फरवरी को भी उनके जन्मोत्सव पर दिये जाएंगे।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने की। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि देश में पनप रहे आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास और धर्मान्तरण पर चिन्ता व्यक्त की तथा कहा कि आर्य समाज के कार्यकर्त्ता उनके उन्मूलन की दिशा में हमेशा से कार्य करते रहे हैं और आज भी वह और अधिक इस सम्बन्ध में कार्य करने का संकल्प व्यक्त करते हैं। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने संबोधित करते हुए कहा - महर्षि दयानन्द का जन्म तो गुजरात में हुआ पर उनकी शिक्षाओं का सबसे ज्यादा प्रकाश पंजाब में हुआ। डी.ए.वी. का सबसे पहला विद्यालय बना तो लाहौर में, तो बेटियों के लिए सबसे पहला विद्यालय पंजाब में खुला और यह सबसे बड़ा विद्यालय सिद्ध हुआ। आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर में, महिलाओं का पहला होस्टल बना तो वह भी कन्या महाविद्यालय ही थों, उससे पहले कोई होस्टल नहीं था। बेटियों के लिए सबसे पहला अनाथालय वह भी पंजाब के फिरोजपुर में, जिसको महर्षि दयानन्द ने अपने हाथों से खोला। जब गुरुकुल पद्धति का शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया तो वह भी पंजाब में ही हुआ था। बाद में गुरुकुल काँगडी बन कर हरिद्वार पहुंच गया। डी.ए.वी.के प्रथम प्रधानाचार्य जिन्होंने अवैतनिक कार्य किया महात्मा हंसराज का जन्म होशियारपुर पंजाब के ब्रजवाड़ा में हुआ था। महर्षि दयानन्द के गुरुवर विरजानन्द का जन्म भी करतारपुर में हुआ। अगर गहराई से विचार किया जाए तो पंजाब के उपर महर्षि दयानन्द की प्रेररणाओं का विशेष प्रताप रहा।

कार्यक्रम में पंजाब के आर्य समाज के स्कूलों के बच्चों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित नाटिकाओं की प्रस्तुति की तथा अनेक विद्यालयों की ओर से सांस्कृतिक नृत्य और संगीत के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में पंजाब के हर जिले से हर शहर से हजारों की संख्या में आर्य समाज के अनुयायियों ने भाग लिया। बड़े उत्साह से सारे पंजाब के स्कूल के बच्चों ने अध्यापकों ने भाग लिया। मंच पर विशेष रूप से पंजाब सरकार के मंत्री श्री महेन्द्र भगत जी, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी के चेयरमैन श्री रमेश मित्तल जी एवं श्री नरेश मित्तल जी भी उपस्थित थे। श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री प्रेम कुमार भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प्रबोध चन्द्र सूद प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल ने भी सम्बोधित किया। श्री ललित मोहन पाठक नवांशहर, श्री नरेन्द्र त्रेहन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर भी उपस्थित रहे। इस सम्मेलन में राज्यभर के लगभग दस हजार आर्यजन, सभी शिक्षण संस्थान के पदाधिकारी, आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। सम्मेलन का मंच बहुत ही भव्य रूप से सजा हुआ था जिसकी सभी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। अंत में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार भारद्वाज जी ने आए हुये, सभी आर्यजनों का, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी का और सभी महानुभावों का अपनी ओर से और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से धन्यवाद व्यक्त किया। शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

प्रथम पृष्ठ का शेष

## जरूरतमंद सुयोग्य और मेधावी 200 छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु 74 लाख की छात्रवृत्ति वितरित ....

विश्व प्रसिद्ध डीएवी जैसे शिक्षण संस्थान प्रमुखता से मानव निर्माण के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, इसी श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज ग्रेटर ह्यूस्टन के सहयोग से आर्य प्रगति छात्रवृत्ति प्रदान कर सैकड़ो विद्यार्थियों को उनके जीवन के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। इस क्रम में 17 नवंबर 2024 को आर्य समाज डिफेंस कालोनी में आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 200 विद्यार्थियों को 74 लाख से अधिक की धनराशि छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की गई, इस अवसर पर जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन, ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव समिति के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, ह्यूस्टन अमेरिका से पधारे सपरिवार श्री भूषण वर्मा जी, दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, एमिटी परिवार से श्री आनंद चौहान जी, डिफेंस कालोनी के प्रधान श्री अजय चौहान जी, श्री अजय सहगल जी, उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं समस्त मंत्रीगण आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी एवं महामंत्री श्री सतीश चडडा जी, सभी वेद प्रचार मंडलों के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष और अनेक अन्य कार्यकर्ता और अधिकारी उपस्थित थे।

### सबकी उन्नति एवं प्रगति सुनिश्चित कर रहा है आर्यसमाज

**- धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी और सपरिवार श्री भूषण वर्मा जी ने यजमान बनकर आहुति प्रदान की और विश्व कल्याण की ईश्वर से प्रार्थना की। इसके उपरांत श्री वीरेंद्र सरदाना जी ने आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण योजना के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि यह छात्रवृत्ति वितरण का यह तीसरा वर्ष है, सबसे पहले 7 लाख की राशि विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी गई थी, 2023 में 45 लाख का सहयोग दिया गया और आज लगभग 200 विद्यार्थियों को 74 लाख का सहयोग करके उनकी उन्नति -गति का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित महानुभावों को पीत वस्त्र पहनाकर स्वागत किया, ज्ञात हो की 19 नवंबर को श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का जन्मदिन है, इसके लिए उनको पुष्प गुच्छ भेंट कर और मंत्र पाठ करके जन्मदिन की बधाई दी गई तथा सभी आर्यजनों ने उनके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के नियम के अनुसार संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, इसी भावना और कामना को आर्य समाज साकार कर रहा है तथा सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए के नियम को चरितार्थ कर रहा है। श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने संक्षिप्त और सारगर्भित उद्बोधन में विद्यार्थियों को संदेश देते हुए कहा कि आप सब एक संकल्प लें, कि जब आप सफल हो जाए तो अपने जीवन में छात्रवृत्ति अर्थात सहयोग की भावना को आगे बढ़ते हुए कम से कम एक अथवा दो विद्यार्थियों का सहयोग अवश्य करें, इसके लिए सभी विद्यार्थियों ने आर्य जी की बात को शिरोधार्य करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर दिल्ली बीजेपी के अध्यक्ष, श्री वीरेंद्र सचदेवा जी ने सभी आयोजकों और अधिकारियों को बधाई देते हुए, महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि सभी विद्यार्थी अपने जीवन में शिक्षा के साथ खेल को भी महत्व दें, क्योंकि खेल जगत में भी भारत लगातार आगे बढ़ रहा है और आप सभी समाचार पत्रों का भी स्वाध्याय अवश्य करें, उनसे भी आपको अच्छी शिक्षाएं प्राप्त होती हैं, आर्य समाज डिफेंस कालोनी के प्रधान श्री अजय चौहान जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में छात्रवृत्ति का महत्व बताते हुए विद्यार्थियों को कहा कि मैं भी छात्रवृत्ति से पढ़कर ही यहां तक पहुंचा हूं, इसलिए इसके महत्व को जाने और अपने भविष्य को उज्जवल बनाएं, श्री आनंद चौहान जी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए विद्यार्थियों को बहुत ही प्रेरक उद्बोधन दिया और श्री अशोक चौहान जी की ओर से भी बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की। आपने एमिटी शिक्षण संस्थानों के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि पूरे देश के कोने-कोने में और दुनिया में एमिटी के 12 से ज्यादा कैंपस है, जो लगातार विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित है और सभी संस्थाओं में प्रतिदिन यज्ञ होता है और विधिवत वैदिक धर्म और संस्कृति तथा संस्कारो का भी प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

श्री भूषण वर्मा जी ने छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए उपस्थित सुयोग्य मेधावी छात्रों को अपने विशेष संदेश में कहा कि आप सब ने अभी कुछ दिन पहले दीपावली मनाई होगी और दीपावली पर आपने देखा होगा की दिए में तीन चीज महत्वपूर्ण होती हैं, सबसे पहले पात्र, बाती और तेल। इसका मतलब है आपका शरीर पात्र है और बाती का अर्थ है, आर्थिक स्थिति लेकिन सबसे बड़ी जो चीज है वह है परिश्रम और पुरुषार्थ, जिसको तेल की संज्ञा दी जाती है, अगर दोनों चीजें हो दिया भी हो और बाती भी हो अगर तेल न हो, यानी परिश्रम और पुरुषार्थ के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता, इसलिए पूरे योजना बद्ध तरीके से आप सभी पूरी मेहनत करें परिश्रम और पुरुषार्थ करें आप सभी को सफलता प्राप्त हो, ऐसी में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, लेकिन साथ ही मेरा आप सबसे एक निवेदन भी है कि आप सभी भविष्य में इस छात्रवृत्ति योजना को विस्तार देते हुए अपना सहयोग अवश्य दें,

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

## पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जालन्धर में समारोह पूर्वक सम्पन्न.....

माननीय मुख्यमन्त्री श्री भगवंत मान जी को स्मृति रूप में महर्षि दयानन्द जी का चित्र, सम्मान पत्र एवं वेद भगवान प्रदान करके सम्मान

सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंजाब सभा एवं लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के अधिकारियों का सम्मान एवं पंजाब सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, आचार्य आर्य नरेश जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, स्वामी सदानन्द जी एवं हिमाचल सभा के प्रधान श्री पी.सी.सूद जी का सम्मान

आर्यसमाज के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं सम्मेलन में पधारे आर्यजनों से भरा विश्वविद्यालय परिसर

पृष्ठ 3 का शेष

जब आप सफलता को प्राप्त करें तो भविष्य में दूसरे विद्यार्थियों की भी सहायता करना ना भूलें, इसलिए संकल्प करें और आगे बढ़ें। श्री रवि गुप्ता जी ने भी इस रचनात्मक कार्य को सराहते हुए शिक्षा के साथ ही संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री जोगेंद्र खट्टर जी ने आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के द्वारा किस तरह से विद्यार्थियों को उच्च प्रशासनिक सेवाओं के लिए तैयार किया जा रहा है, उसके विषय में विस्तार से बताया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी दानी महानुभावों का और उपस्थित आर्यजनों का आभार व्यक्त किया और अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी जीते हैं, लेकिन सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना यह आर्य समाज का प्रमुख नियम है, जिसका पालन करते हुए आर्य समाज लगातार आगे बढ़ रहा हैं और सभी

## जीवन में सफलता के लिए अर्थ के साथ ही परिश्रम और पुरुषार्थ है नितान्त आवश्यक – भूषण वर्मा

विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए अवसर प्रदान कर रहा है। इसके लिए सभी का आभार है और सभी का धन्यवाद है। श्री विनय आर्य जी ने मंच संचालन किया और इस समस्त योजना के पीछे जो

– शेष पृष्ठ 7 पर

दीप प्रज्ज्वलित करके स्कॉलरशिप वितरण का शुभारम्भ करते सर्वश्री सुरेन्द्र आर्य, भूषण वर्मा, आनन्द कुमार चौहान, सत्यानन्द आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, अजय चौहान, सुखबीर सिंह आर्य, हरिओम बंसल, सुरेन्द्र रैली, अजय सहगल एवं श्री रविदेव गुप्त जी

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्री आनन्द कुमार चौहान जी एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर जी

श्रीमती एवं श्री भूषण वर्मा जी को सम्मानित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी

# आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का वार्षिकेत्सव समारोह पूर्वक संपन्न

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 8 से 10 नवंबर 2024 तक समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। सामवेद परायण यज्ञ म सैकडों यजमानों ने आहुति दी। कई पुस्तकों का विमोचन तथा गुरुकुल के पूर्व स्नातकों ने संस्कृति और संस्कृत के उत्थान को लेकर गहन चर्चा की। इस दौरान निर्णय लिया कि गुरुकुल में प्रतिदिन चारों वेदों का पारायण यज्ञ क्रमशः चलता रहेगा। इसके अलावा शोध लेख एवं ब्रहाज्योति पत्रिका के प्रकाशन पर भी विचार किया गया।

आयोजन के प्रथम चरण में गुरुकुल के पं. गुरुदत्त विद्यार्थी सभागार में शास्त्र व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर पाणिनीय व्याकरण तंत्रिका जीवन बोर्ड पुस्तक का

विमोचन लेखक प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री की मौजूदगी में केंद्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपति प्रो. श्रीनिवास बरखेड़ी ने किया। आचार्य प्रद्युम्न, कुलाधिपति डा. बागीश आचार्य, समन्वयक ओमनाथ विमली, प्रो. वाचस्पति मिश्र पूर्व अध्यक्ष उत्तर प्रदेश संस्कृति संस्थान लखनऊ, प्रो. सुरेंद्र कुमार, प्रो. बलवीर आचार्य महर्षि दयानंद

– जारी पृष्ठ 7 पर

**दिल्ली सभा का प्रकल्प : घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ**

## दिल्ली की जय-जय कालोनियों में लगातार हो रहे हैं यज्ञों के आयोजन

# हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभी उत्साहपूर्वक श्रद्धाभाव से देते हैं यज्ञाहुतियां

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज हमेशा प्रेरक पर्वों को अत्यंत हर्ष उल्लास से मनाता आया है। लेकिन इसके साथ ही आर्य समाज की यह मान्यता भी हमेशा से रही हैं, कि जो लोग झुग्गी, झोपड़ी और निर्धन बस्तियों में रहते हैं, उन परिवारों को और उनके छोटे-बड़े जवान बच्चों को, स्त्री, पुरुषों को जहां एक तरफ संस्कार प्रदान किए जाएं, उनको जीवन जीने की कला सिखाई जाए, उन्हें नशा आदि दुर्गुण से बचाया जाए, वहीं उन्हें परिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय पर्वों से जोड़कर और राष्ट्र और समाजसेवी भी बनाया जाए, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर की अमृत संतान है। जय जय कालोनियों में रहने वाले अभावग्रस्त लोगों को अगर हम अपने साथ नहीं जोड़ेंगे, तो फिर उनके जवान बच्चे मुख्यधारा से हटकर अपराध जगत से जुड़ जाते हैं।

इसी भावना और कामना को ध्यान में रखते हुए, आर्य समाज द्वारा हमेशा सामाजिक और राष्ट्रीय पर्वों को सेवा बस्तियों में मनाया जा रहा है। इस श्रृंखला में पिछले दिनों नवरात्र, बाल्मीकि जयंती से लेकर दीपावली आदि पर्वों पर दिल्ली की जय जय कालोनियों में वहां के नागरिकों के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सभा संवर्धको ने यज्ञ, भजन और राष्ट्रभक्ति का प्रेरक संदेश दिया। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हुए और सभी ने राष्ट्रभक्ति, प्रभु भक्ति के रंग में रंग कर देश धर्म और संस्कृति को अपनाने का संकल्प लिया। बड़े ही उत्साह पूर्वक बच्चों का भाग लेना अत्यंत आकर्षण का केंद्र रहा।– ***संयोजक***

साप्ताहिक स्वाध्याय

# आर्यसमाज का विस्तार

*गतांक से आगे-*

एक रोज व्याख्यान देते हुए महर्षि जी महाराज पुराणों की असम्भव बातों का खण्डन करते-करते उनकी कदाचार-शिक्षा का खण्डन करने लगे। उस समय पादरी स्कॉट, मिस्टर रेड कलेक्टर जिला, और मि॰ एडवर्ड साहब कमिश्नर डिवीजन, पन्द्रह-बीस और अंग्रेजों के साथ विद्यमान थे। महर्षि जी ने पुराणों की पंच कुमारियों की चर्चा करते हुए एक-एक गुण बयान करने आरम्भ किये और पौराणिकों की बुद्धि पर शोक प्रकाशित किया। द्रौपदी के पांच पति कराके उसे कुमारी करार दिया और कुन्ती, तारा, मन्दोदरी आदि को कुमारी कहना पौराणिकों की आचार सम्बन्धी शिक्षा को निकम्मा सिद्ध करता है। महर्षि जी की कथन शैली ऐसी परिहासपूर्ण थी कि श्रोता थकने का नाम नहीं लेते थे। इस पर कलेक्टर साहब और कमिश्नर साहब आदि हंसते और प्रसन्नता प्रकाशित करते थे। किन्तु इस विषय को समाप्त करके महर्षि जी महाराज बोले-

'पुरानियों की तो यह लीला है, अब किरानियों की लीला सुनो! ये ऐसे भ्रष्ट हैं, कि कुमारी के बेटा पैदा होना बताते, फिर दोष सर्वज्ञ, शुद्ध-स्वरूप परमात्मा पर लगाते और ऐसा घोर पाप करते हुए तनिक लज्जित नहीं होते।' इतना कहना था, कि साहब कलेक्टर और साहब कमिश्नर के चेहरे मारे गुस्से के लाल हो गए लेकिन महर्षि जी का व्याख्यान उसी जोर से जारी रहा। उस रोज ईसाई मत का खण्डन व्याख्यान की समाप्ति तक करते रहे। दूसरे रोज ही जांची लक्ष्मीनारायण की साहब कमिश्नर बहादुर की कोठी पर तलबी हुई। साहब बहादुर ने फरमाया कि पण्डित साहब को कह दो कि बहुत सख्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई लोग सभ्य हैं। हम तो बहस-मुबाहिसा में सख्ती से नहीं घबराते, लेकिन अगर जाहिल हिन्दू और मुसलमान बिगड़ गए, तो तुम्हारे स्वामी पण्डित के व्याख्यान बन्द हो जाएंगे। जांची साहब यह पैगाम महर्षि जी के पास पहुंचाने का वादा करके बाहर चले आए, लेकिन महर्षि जी तक यह मजमून पहुंचाने वाला बहादुर कहां से मिलता? कई एक डच्योढ़ी-बरदारों से प्रार्थना की, लेकिन कोई भी आगे बढ़ने की हिम्मत न कर सका। आखिरकार दृष्टि एक नास्तिक पर पड़ी और उसका जिम्मा ठहराया गया कि वह मुआमला पेश कर देवे। जांची साहब वह नास्तिक और चन्द एक दीगर महर्षि के कमरे में पहुंचे जिस पर नास्तिक ने सिर्फ यह कहकर कि जांची साहब कुछ अर्ज करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें कमिश्नर साहब ने बुलाया था, किनारा किया और कुल मुसीबत जांची साहब पर टूट पड़ी। अब जांची साहब कभी सिर खुजलाते हैं, कभी गला साफ करते हैं। आखिर पांच मिनट तक विस्मय में देखकर महर्षि जी ने फरमाया, भाई, तुम्हारा तो कोई काम करने का समय ही नहीं है, इसलिए तुम समय की कीमत नहीं समझ सकते। मेरा समय अमोल है, जो कहना चाहते हो वह कह दो। इस पर जांची साहब बोले, महाराज, अगर सख्ती न की जाय तो क्या हर्ज है? इससे असर भी अच्छा पड़ता है, और फिर अंग्रेजों को नाराज करना भी अच्छा नहीं है इत्यादि। ये बातें अटककर और बड़ी मुश्किल से जांची साहब के मुंह से निकलीं। इस पर महाराज हंसे और फर्माया, अरे बात क्या थी, जिसके लिए गिड़गिड़ाता है, और इतना समय खराब किया? साहब ने कहा होगा तुम्हारा पण्डित सख्त बोलता है, व्याख्यान बन्द हो जाएंगे, यह होगा, वह होगा। अरे भाई, मैं हव्वा तो नहीं कि तुझे खा लूंगा? उसने तुझसे कहा, तू मुझसे सीधा कह देता व्यर्थ इतना समय क्यों गंवाया? वहीं एक विश्वासी पौराणिक हिन्दू बैठा था। बोला, 'देखा? यह तो कोई अवतार हैं, दिल की बात जान लेते हैं।'

खैर, यहां तो जो कुछ हुआ सो हुआ। अब व्याख्यान का हाल काबिले-जिक्र है। मैंने केशवचन्द्र सेन, लालमोहन घोष, सुरेन्द्रनाथ

बनर्जी, ऐनी बैसेण्ट और अन्य बहुत-से प्रसिद्ध व्याख्याताओं के भाषण सुने हैं और वह भी उनकी बढ़ती के समय में। लेकिन मैं सच्चे दिल से कहता हूं, कि जो असर मुझ पर उस रोज के सादे शब्दों में मालूम हुआ, अब तक तो दिखाई दिया ही नहीं, आगे की ईश्वर जाने! उस रोज आत्मा के स्वरूप पर व्याख्यान था। इसी प्रकरण में महाराज ने सत्य के बल पर बोलना प्रारम्भ किया। पादरी स्कॉट को छोड़कर पहले दिन के सब अंग्रेज सज्जन विद्यमान थे। कोई आदमी नहीं हिलता था। **-क्रमशः**

**पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन**
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

**Continue From Last Issue**

# Expansion of Arya Samaj

That situation was full of danger, so the commander of Dharma had to use harsh means according to the rules of war. What was wrong with it?

Rishi Dayanand was a recognized leader of the Aryan race in northern India. He was the founder, guru and acharya of Aryasamaj. In the eyes of the King and the people, he was one of the leaders of India. This was the situation when he went back to Yukta province in the month of July 1877 AD after visiting Punjab. For almost two years, he kept on traveling in Yukta province only. Prachaar took place in this tour, new Aryasamajs were established, and discussions were held with clerics and priests. Rishi Dayanand reached Roorkee on 29 July 1878. Students and professors of Engineering College used to attend the lectures there. The questions of those people were often on the subject of science. One day Swami ji discussed on this topic whether there was science in ancient India or not. By giving many proofs of Vedas and Aarsh texts, he informed that almost all the main scientific principles, on which new science is proud, are present in our literature. Swamiji reached Meerut at the end of August via Aligarh from Roorkee. There was a special awakening in Meerut at that time. On the auspicious day of September 19, 1878, Arya Samaj was established there. Due to the religious force of the enthusiastic Aryan men of Meerut, this society soon became the main among the societies of Yukta province. Swamiji reached Delhi from Meerut. Aryasamaj was also established here after the prachaar.

Moving from Delhi, Swami ji toured with great speed for six-seven months. He kept giving new life to Aryan men by doing propaganda and reform work in Ajmer, Nasirabad, Jaipur, Rewari, Delhi, Meerut, Haridwar, Dehradun etc. You reached Moradabad in the month of May 1879. Swami ji stayed for a long time in Moradabad on the request of Munshi Indramani etc Bhagat. The subject of his lectures was religious, but in his view, religion was so broad that there is hardly any subject related to human life, on which he did not shed light. Rishi Dayanand used to publish his opinion on all the subjects like deep thoughts on God and soul, problems of science, social questions like marriage, condition of the country, duties of the King etc. His 'Dharma' was very detailed.It was not confined to the worship of God only , nor was he ready to draw a line between them out of fear or policy. 'Dharma' was one, it was omnipresent, it was all-encompassing, there is some significance of 'Dharma' in every behavior of man - this was the theory of Rishi Dayanand. Your lectures and your main book 'Satyarth Prakash' prove that you do not consider 'Dharma' as a religion, faith or ritual. But believed to be a comprehensive rule. This was the reason why the sage gave scores of lectures on the ancient glory of Aryavarta, prayed for the Chakravarti kingdom of the Arya caste in many prayers and pointed out the shortcomings of the foreign rule of India by stating the dharma of the King and the subjects. At the time of his lectures in Moradabad, local Collector Mr. Spedding used to come along with others. On his request, one day Swamiji gave a lecture on Rajdharma. Propounding the principles of politics with the evidence of the Vedas and Smritis, the sage fearlessly exposed the faults of the state. The lectures went on for hours. At the end of the lecture, the Collector thanked Swami ji and said that if the relations between the king and the subjects had remained like this, then the political revolution which has taken place, would never have happened. Walking from Moradabad, Swamiji reached Bareilly while staying at Badaun. Your camp was set up at the Kothi of Lala Lakshminarayan, the nobleman of Bareilly. Lectures started. Swamiji used to reach the place of lecture well before the time and started the lecture at the appointed time.

To be Continue.....

**With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339**

पृष्ठ 5 का शेष **जरूरतमंद सुयोग्य और मेधावी 200 छात्रों को उच्च शिक्षा ...**

आर्य समाज का भाव है, बीच-बीच में प्रेरक संदेश प्रदान किये। सभी विद्यार्थियों को महर्षि दयानंद की जीवनी वितरित की गई और उससे पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर आधारित एक वीडियो भी दिखाई गई, जिसमें महर्षि दयानंद के जीवन, उनके सेवा कार्य और उनके संदेशों को युवा शक्ति तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। छात्रवृत्ति वितरण समारोह में आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने विद्यार्थियों को अपने करकमलों से छात्रवृत्ति प्रदान की। आज का यह दिन अपने आपमें ऐतिहासिक और प्रेरक सिद्ध हुआ, क्योंकि पूरे भारत से चुने हुए, विद्यार्थी आज अपने जीवन को गरिमा प्रदान करने के लिए आर्थिक सहयोग प्राप्त कर रहे थे और सभी के मन में आर्य समाज के प्रति और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति आभार और कृतज्ञता के भाव थे, प्रेम सौहार्द के वातावरण में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ और सभी विद्यार्थी आर्थिक सहयोग लेकर अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ गए। आर्य समाज के सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने विद्यार्थियों को खूब आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्रदान की। आर्य समाज डिफेंस कालोनी के प्रधान श्री अजय चौहान जी, मंत्री श्री अजय सहगल जी और उपस्थित सभी अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद किया। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 5 का शेष **आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का वार्षिकोत्सव....**

विश्वविद्यालय रोहतक, योगराज अरोडा प्रधान, प्रो. विनय विद्यालंकार ने गुरुकुल की प्रचीन परंपरा के निर्वहन तथा संस्कृति और संस्कृत के उत्थान पर चर्चा की। इस दौरान सभी ने गुरुकुल परिसर में वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम में डा. अवनीश कुमार, डा. ब्रजेश गौतम, डा. हरिदेव आर्य, संदीप सजर, हेमकुमार, श्यामपाल विद्रोही, डा. शिव कुमार, माधव प्रसाद, प्रभुशरण आर्य आदि मौजूद थे। द्वितीय चरण के कार्यक्रम में रविवार को साामवेद पारायण यज्ञ की पूर्ण आहुति देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों ने श्रद्धा के साथ दी। यज्ञ के ब्रडा आचार्य कमलेश शास्त्री तथा डा. हरिदेव शास्त्री रहे। इस मध्य मारहरा विधायक वीरेंद्र लोधी ने भी यज्ञ में आहुति दी। उनका सम्मान प्रधान योगराज अरोडा, मंत्री विनय विद्यालंकार तथा कोषाध्यक्ष ब्रह्मचारी शिवस्वरूप ने किया।

कार्यक्रम के दौरान गुरुकुल को दिल्ली संस्कृत विश्व विद्यालय से संबद्ध कराए जाने के अलावा गुरुकुल को नई दिशा देने के संबंध में भी रणनीति बनाई गई। गुरुकुल से पत्रिका ब्रहा ज्योति के प्रकाशन पर सहमति बनी। इस दौरान प्रो. सुरेंद्र कुमार, बलवीर आचार्य, यज्ञदत्त शर्मा, डा. ओमप्रकाश, डा. वेदप्रकाश, श्यामपाल विद्रोही, डा. जितेंद्र कुमार सहित बड़ी संख्या में आर्य समाज के लोग तथा गुरुकुल के पूर्व स्नातक मौजूद रहे।

## महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकारों और सेवाकार्यों पर आचार्यश्री राजेश द्वारा लिखित पुस्तकों का विमोचन

दिवाली की शाम काश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा कोझिकोड वेद मंदिर में आयोजित महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति समारोह में आचार्य श्री राजेश की पुस्तक 'महर्षि दयानंदन्: प्रतिरोधत्तिन्टे आषम' (मलयालम) और उसके हिंदी अनुवाद 'महर्षि दयानंद: प्रतिरोध की गहराई ' का विमोचन किया गया। कोझिकोड विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. आरसु ने ओरल हिस्ट्री रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक तिरुर दिनेश को देकर पुस्तकों का विमोचन किया। ये पुस्तकें महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का विश्लेषण करके आर्षप्रमाणों के आधार पर उनको प्रतिरोध करती हैं और आधुनिक भारत के निर्माण में महर्षि दयानंद द्वारा निभाई गई भूमिका पर चर्चा करती हैं। पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी (अध्यक्ष, जे बी एम ग्रूप) ने प्रदान किया था। डॉ. आरसु ने प्रस्तावित किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती क्रान्तदर्शी उत्पतिष्णु थे। दयानंद द्वारा निर्मित नींव की बुनियाद पर ही भारतीय नवजागरण के सारथियाँ आगे बढ़े। महर्षि दयानंद में ज्ञान और क्रांति का मिलन हुआ। उन्होंने सत्य को ढकने की पद्धति नहीं अपनाई, बल्कि शुद्ध आंतरिक सत्य को उजागर किया, पुस्तक विमोचन के बाद आचार्य श्री राजेश द्वारा जवाबी भाषण किया। हिन्दी पुस्तक के अनुवादक एवं आकाशवाणी कोझिकोड स्टेशन के पूर्व सहायक निदेशक की ओ वसावन मुख्य अतिथि थे। काश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन में वैदिक प्रशिक्षक के.पी. अजीत वैदिक ने समारोह की अध्यक्षता की। सी. सुरेश वैदिक ने स्वागत भाषण एवं श्री हरिदास ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

## सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***संयोजक 9650183335***


## महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर

**दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता**

**कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम**

**1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार, 4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद, सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद**

**प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार**

**सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार**


साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

**शोक समाचार**

## श्री जीवनलाल आर्य को पुत्रशोक

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली के के मन्त्री श्री जीवनलाल आर्य जी के सुपुत्र श्री नलिन आर्य जी का 14 नवम्बर, 2024 की रात्रि आकस्मिक निधन हो गया। अगले दिन उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान घाट में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 18 नवम्बर, 2024 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपपाल आर्य तथा उनके निजी परिवाजनों सहित आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## श्री हरीश धवन जी का निधन

आर्यसमाज लोधी रोड जोर बाग, नई दिल्ली के प्रधान श्री हरीश धवन जी का दिनांक 19 नवम्बर, 2024 को लगभग 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ दयानन्द मुक्तिधाम, लोधी रोड में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 22 नवम्बर, 2024 को आर्यसमाज लोधी रोड जोरबाग में सम्पन्न हुई, जिसमें उनके निजी परिवाजनों सहित आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## श्रीमती हरप्रीत कौर जी को पितृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य मीडिया सैन्टर की कर्मचारी/कार्यकर्ता श्रीमती हरप्रीत कौर जी के पिता श्री सुरजीत सिंह अरोड़ा का 19 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति श्रद्धांजलि सभा 22 नवम्बर, 2024 हो सम्पन्न हुई।

## सुश्री मानसी अग्रवाल की दादीमां का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य मीडिया सैन्टर की कर्मचारी/कार्यकर्ता सुश्री मानसी अग्रवाल जी की दादीमां का 15 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

**साप्ताहिक आर्य सन्देश**

सोमवार 18 नवम्बर, 2024 से रविवार 24 नवम्बर, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 21-22-23/11/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20, नवम्बर, 2024

ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में संस्कृति मन्त्रालय के विशेष सहयोग से

# महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर जारी
# स्मृति डाक टिकट लोकार्पण समारोह

## द्वारा : माननीय श्री राजनाथ सिंह जी, रक्षामन्त्री (भारत सरकार)

*प्रतिष्ठा में,*

तिथि परिवर्तन

**रविवार 15 दिसम्बर, 2024**
**भारत मंडपम, प्रगति मैदान**

तिथि परिवर्तन

**विशेष अनुरोध**

समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संगठनों के अधिकारियों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथि में अपनी संस्था का कोई आयोजन न रखें और अधिकाधिक संख्या में सपरिवार पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

-: निवेदक :-

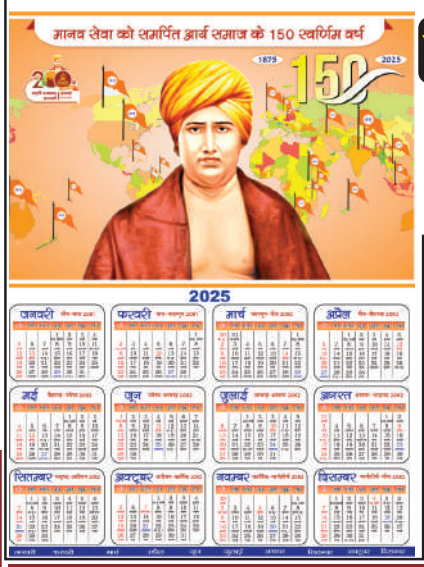

★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ★ आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

## वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित




**मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा**

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com



ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

# सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ




कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com



JBM Group
Our milestones are touchstones




ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह